International Journal of Applied Research 2017; 3(8): 780-784

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(8): 780-784
www.allresearchjournal.com
Received: 10-06-2017
Accepted: 12-07-2017

डॉ. सुनीता
सहायक प्रवक्ता हिन्दी विभाग
राजकीय महिला महाविद्यालय, पाली, रेवाडी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सुनीता
सहायक प्रवक्ता हिन्दी विभाग
राजकीय महिला महाविद्यालय, पाली, रेवाडी, हरियाणा, भारत

'अंतिम–पड़ाव' कहानी संग्रह का शिल्प वैशिष्ट्य

डॉ. सुनीता

शिल्पः अर्थ एवं स्वरूप

शिल्प शब्द संस्कृत की शिल्प धातु में 'यक्' प्रत्यय लगने से बना है। संस्कृत कोश में शिल्प (शील+प) को मूर्तिकला, कारीगरी, हुनर कहा गया है। [1]

किसी भी साहित्य विधा में शिल्प का बडा महत्व होता हैं। यह कलात्मक निर्वाह की पद्धति है। शिल्प अंग्रेजी के प्रसिद्ध शब्द 'टेकनीक' का हिन्दी रूपांतर है। जिसका अर्थ रचना प्रणाली से लिया जाता है। अंग्रजी शब्द कोश के अनुसार 'कलात्मक कार्यवाही की वह रीति जो संगीत अथवा चित्रकला में प्राप्य है, अथवा कारीगरी'। [2]

शिल्प किसी वस्तु के रचने की प्रणाली को कहते है। किसी वस्तु के निर्माण के लिए जिन विधियों का प्रयोग किया जाता है वही विधियॉ शिल्प हैं। कहानी का शिल्प निरंतर विकासमान रहता है। वृहत हिन्दी कोश में भी शिल्प का शाब्दिक अर्थ है–'किसी चीज के बनने या रचने का ढंग है।' [3]

साधारण अर्थ में कहा जाए तो यह एक तरीका है। इसका साहित्य की सभी विधाओं में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

इस संदर्भ में डॉ्र. लक्ष्मीनारायण लाल लिखते हैं–''कला के विभिन्न तत्वों उपकरणों का वह विधान, वह ढंग जिससे कलाकार की अनुभूति अमूर्त से मूर्त हो शिल्प है।'' [4]

इस प्रकार शिल्प संवेदना से जुडा होता है। शिल्प के माध्यम से ही कहानीकार की संवेदना प्रकट होती है। दूसरे शब्दों में कलाकार अपने भावों व विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए जिन तरिकों रीतियों व विधियों का सहारा लेता हे, वे ही कला की शिल्प शब्द विधियां होती हैं।

शिल्प में आकार का आग्रह है। शिल्प के माध्यम से ही हम महाकाव्य, प्रबन्धकाव्य उपन्यास व कहानी में अन्तर स्पष्ट कर पाते हैं। पाठक भी शिल्प के आधार पर किसी विशेष साहित्य रूप को पढना चाहते है। शिल्प विधि का संबंध लेखक ही लेखक की लेखकीय दृष्टि से होता है और पाठक को अपनी इच्छानुसार साहित्य चुनाव में मदद करता है।

इन परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जाता है कि अपनी मनोगत भावनाओं व विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए तथा अमूर्त को मूर्त रूप देने के लिए कलाकार द्वारा अपनाई गई विधियॉ शिल्प विधि के नाम से पुकारी जाती हैं। काव्य शिल्प के द्वारा ही कवि या रचनाकार की संवेदाएँ उभरकार आती है।

शिल्प का महत्व

सहित्यकार अपने भावों को स्पष्ट एवं सशक्त ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए शिल्प की सहायता लेता है। शिल्प को ही किसी रचना की नींव माना जाता है। जिसके बिना किसी भी साहित्य कृति का निर्माण करना असंभव है। शिल्प की अनिवार्यता पर जोर देते हुए 'हेनरी जेम्स' कहते हैं कि'' शिल्प कथा साहित्य का अनिवार्य अंग है। इसके बिना कथा कही नहीं जा सकती। उसी प्रकार उपन्यास की वस्तु और उसका शिल्प–रूप– विधान अन्योन्याश्रित है।'' [5]

कोई भी कृतिकार शिल्प के द्वारा ही कृति में उत्कृष्टता लाने का प्रयास करता है क्योंकि कोरी प्रतिभा, उत्कृष्ट रचना का सृजन करने में समर्थ नही होती। प्रतिभा के साथ–साथ कुशल शिल्प का होना भी अति आवश्यक है डॉ. त्रिभुवन सिंह ने शिल्प के महत्व को दर्शाते हुए कहा है कि, ''उपन्यासों में अभिव्यक्ति पाने वाले कितने प्रसंग, व्यक्ति तथा समाज होते हैं, उनका व्यक्तित्व ही समाप्त हो जाए, यदि शिल्प न हो। इसके अभाव में तो कृति हवाई किला बनकर ही रह जायेगी। कल्पना और यथार्थ के भेद को समाप्त करने का काम शिल्प ही करता है, जिसके माध्यम से अभिप्रेत भावों अथवा उद्देश्यों का रूपान्तरण संभव होता है।'' [6]

अतः हम कह सकते है कि शिल्प ही वह माध्यम है, जिसमें कृतिकार अपने विषय का अनुसंधान तथा विकास करता है। वह इसके द्वारा उसे मूर्तरूप देता है, अर्थ बोध करता है और मूल्यांकन भी करता है। लेखक के अनुभवों को अच्छी तरह कलात्मक अभिव्यक्ति करने का सामर्थ्य शिल्प में ही होता है।

शिल्प के पर्याय

पर्याय क अर्थ होता है सामानार्थी या पर्यायवाची शब्द। प्रत्येक भाषा में शिल्प के लिए अलग–अलग शब्द प्रयुक्त हुए हैं। हिन्दी में इस शब्द के लिए शैली व रचना विधान का नाम आता है। इसी प्रकार अंग्रेजी में 'टेकनीक' शब्द प्रयुक्त हुआ है। अंग्रेजी में 'टेकनीक' शब्द के लिए 'ढॉचा' तथा 'रूप' पर्यायवाची शब्द मिलते हैं। 'रूप' शब्द का आज सर्वाधिक प्रयोग मिलता है, जिसका अर्थ है बनाना या गढना।

टेकनीक का अर्थ यन्त्र कला अथवा रचना प्रणाली से भी लिया जाता है। अग्रेंजी का 'क्राफ्ट' शब्द भी शिल्प शब्द का पर्याय माना जाता है। इसके अलावा अग्रेंजी में शिल्प के लिए हम फार्म स्ट्रक्चर, मेक्निक्स, सेटिंग आदि अनेक का प्रयोग भी करते हैं।

हिन्दी में इस शब्द के लिए शैली शब्द का ही सर्वाधिक प्रयोग देखने को मिलता है, परन्तु शैली में व्यक्तित्व की प्रधानता रहती है, जबकी शिल्प विधि में रचना–कौशल या कारीगरी की प्रधानता रहती है। इस प्रकार शिल्प व शैली में काफी अन्तर है। हिन्दी साहित्य में शिल्प के लिए विभिन्न शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है– शिल्प विधि, शिल्प विधान प्रविधि,अभिव्यंजना रीति आदि।

एक सफल कलाकार को कला की बाह्य अभिव्यक्ति को उतना सूक्ष्मता से ग्रहण करना पडता है, जितनी सूक्ष्मता से वह अपनी अनुभूति ग्रहण करता है।

अतः हम कह सकते है कि शिल्प शब्द में जो व्यापकता एवं गहराई है, वह इन विभिन्न शब्दों द्वारा प्रकट नही हो सकता। निश्चय ही शिल्प शब्द अपने आप में एक ऐसा सार्थक शब्द है, जिसके बदले दूसरा शब्द उपयुक्त नही लगता

भाषा

भाषा भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। भाषा के माध्यम से ही लेखक अपने अमूर्त विचारों को मूर्तरूप प्रदान करता है। मिश्रा जी के अनुसार यदि भाषा का लिखित एवं उच्चरित रूप समान है तो भाषा शैली अच्छी होती है। 'भाषा ही वह शक्ति होती है जिसके द्वारा जीवन की सच्चाई से मनुष्य अवगत होता है। जो भाषा अनुभूतियों को सम्प्रेषित करने में असमर्थ होती है वह भाषा नही कहलाती।

आचार्य विश्वनाथ ने तो 'वाक्य रसात्मक् काव्यम्' [7] कहकर रस से युक्त वाकयों को काव्य कहा है। इससे भाषा के माधुर्य व रसमय होने की की ओर संकेत किया गया है।

किसी भी भाषा मे यदि वाक्य कथा, काल पात्रों के अनुरूप हो,भावानुकूल व सटीक हो तभी वे वाक्य भाषा की सफलता में सहायक होते हैं। भाषा के द्वारा ही लेखक अपने भावों को अभिव्यक्ति प्रदान करता है।भाषा जितनी बाधगम्य, सरल व सुस्पष्ट होगी उतनी ही वह प्रभावशाली सिद्ध हो पायेगी। एक ही कहानी में सभी पात्रों की भाषा भिन्न–भिन्न होती है। यह उनके शहरी, ग्रामीण, अनपढ व पढे लिखे होने पर आधारित है। भावों की अभिव्यक्ति की सभी प्रक्रियाओं का संबंध शिल्प विधि से होती है। कहानीकार अपने विचारों व मन की भावनाओं को मूर्त्र रूप प्रदान करने के लिए जिन तरिकों व विधियों को अपनाता है वे सभी कला की शिल्प विधि के अन्तर्गत आते हैं।

'अंतिम पडाव' कहानी संग्रह की समस्त कहानियों की भाषा सर्वत्र सरल एवं प्रसंगानुकूल दिखाई देती है। यहां सरल भाषा का एक उदाहरण देखा जा सकता है– 'ड्राइवर ने सडक पर आते ही गाडी की रफ्तार बढा दी थी। रात का समय था हवा ठंडी थी। ठंडी हवा में उन्हे अजीब सुख मिल रहा था।उन्हे पता ही न चला कि कब उनकी ऑख बंद हो गई और कब वे नींद के आगोश में आ गए थे। गाडी पूरी रफ्तार से भागी जा रही थी। उन्हें गाडी की रफ्तार का कोई इल्म नही था। पचास मिनट बाद जब उनकी गाडी रूकी तो ड्राइवर ने देखा कि वे वैन की पिछली सीट पर दोनों पैर फैलाकर सो रहे हैं। उनके खर्राटे की आवाज पूरी वैन में गूँज रही है। उनके चेहरे पर इस ठंडी हवा में भी पसीने की लकीरें बह रही हैं। फॉरेन करेंसी भरा बैग उनके पास ही सीट के नीचे पडा है।' [8]

रोचकता का गुण आलोच्च कहानी संग्रह में सर्वत्र विद्यवान है।प्रत्येक कहानी में शुरू से लेकर अन्त तक विषयवस्तु की रोचकता बनी रहती है। रोचकता का समावेश निम्नलिखित पंक्तियों में देखा जा सकता है–'जनवरी का महीना था। बाहर तेज और ठंडी हवा चल रही थी। उसने इस ठंडी हवा से बचने के लिए कंबल को कसकर लपेट लिया। इस ठंडी हवा से वह सिहर उठा। रात के दस–सवा दस का वक्त रहा होगा। ढाणी में चारों तरफ सन्नाटा था। रात के इस अँधेरे में सॉय–सॉय हवा चल रही थी। पंद्रह–सोलह साल उसकी उम्र रही होगी। मझोला कद, घुँघराले बाल,बडी–बडी ऑखे, लंबा सा चेहरा, कुछ करने की उमंग, आकाश से ऊपर उठने का हौंसला, कुछ बनने की चाह, कही पहुंचने की जिद, लेकिन कहॉ पहुंचा। उसके लिए तो सारे रास्ते बंद थे। जयपुर–दिल्ली हाईवे की इस ढाणी में रह कर आखिर वह कहॉ पहुंच सकता था, जहॉ बिजली नही थी, जहॉ स्कूल नही थे और जहॉ थे भी, वहॉ मास्टर नहीं थे। जहॉ केवल खेत थे और जानवर थें दिन रात हाड तोडने वाली मेहनत थी। ऐसे में वह कहॉ पहुचॅ सकता था। वह बडी–बडी गाडियों को तेज रफ्तार से दिल्ली या जयपुर की ओर भागते जरूर देखता था। टेलीविजन और रेडीयों दिन–रात उसकी ढाणी के घर–घर में चीख–चीखकर कहता था कि जमाना बदल गया है, दुनियॉ बदल गई हैं, पर उसके लिए कहॉ कुछ बदला? सब कुछ तो वहीं है, वही हाडतोड मेहनत,वही रात–रात भर जागकर खेतों को जानवरों से बचाना। अपने आप को सांप और बिच्छुओं से बचाना। सब कुछ ज्यों का त्यों था, कहीं कुछ बदला नही।' [9]

हरियश जी की कुछ कहानियों में चित्रात्मक भाषा का भी प्रयोग पाया जाता है जिससे कि विषय में रोचकता और बढ जाती है। जैसे किः–' उन्होनें बाग का गेट धीरे से खोला। कुछ पलों तक वे बाग के गेट के पास खडे रहें। बाग को देखकर सन्न रह गए। बाग के अन्दर सन्नाटा था कटे हुए पेड थे। सूखी हुई घास थी जगह–जगह गड्ढे में पानी भर चुका था। जगह–जगह कटी हुई लकडियों का ढेर था। बाग में थोडे से पौधे बचे थे जो सूखकर पीले पड चुके थे। पानी के नल और पानी के पाईप ध्वस्त हो चुके थे। फूलों के पौधों का नामों निशान नही था। बाग की बीच में लगा फव्वारा टूट चुका था। उसकी जगह ईटों और पत्थरों का अंबार लगा था चारों तरफ कूडे–कचरें के ढेर थे। पेडों को सॉय–सॉयं करती हवा था। कही कोई हलचल नहीं। कही कोई सुगबुगाहट नहीं। चारों तरफ शांति, सन्नाटा और विरानगी थी। बाग की इस वीरानगी को देखकर वे सहम गए। चेहरे पर उदासी की रेखाऍ छा गई।' [10]

चित्रात्मकता का एक अन्य उदाहरण देखिएः–'भुज पहुॅचते–पहुॅचते रात हो गयी थी।सीधे पहुॅचे अपने घर। उनका अपना घर टूट चुका है घर का सारा समान मलबे में दबा पडा है। उनकी पत्नी और बच्चों के सिरों पर चोटे आई थी। सारे सिर पर पट्टियॉ बंधी मलबे के पास ही एक कोने में घर के मलबे से निकाला हुआ सामान रखा था। मॉ– बाप की ऑखों मे वीरानगी थी। सबको चोटें आई थी। किसी को कम, किसी को ज्यादा। उन्हे पता चला कि उनके अपने रिश्तेदार बचपन के संगी–साथी, स्कूल के मास्टर और गांव के न जाने कितने छोटे–छोटे बच्चे मलबे मे दब गए। शहर में रह गए थे आधे टूटे मकान। उन मकानों में घर का बिखरा सामान। टूटा टी.वी., टूटा फ्रिज, घर में बिखर रसोई के बर्तन, दीवारों में दरारें, उन दरारें के ऊपर फहराते कलेंडर, करहाते लोग, दवाईयों का इंतजार करते लोग। उन्होनें देखा न उनके खाने का ठिकाना था, न पीने का। लोग भूखे–प्यासे थे और ठंड से ठिठूर रहे थे। जहां तक नजर जाती थी मलबा ही मलबा था। उन्होने देखा कि भुज के जिंदादिल और खुशमिजाज लोग रात के अंधेरे में पथरीला चेहरा लिए मलबों से निकाले जा रहे शवों की पहचान कर रहे थे। उसी मलबे से अपने घर का टूटा–फूटा सामान भी निकाल रहे थे। गुलजार

रहने वाले इस इलाके में सन्नाटा सा छाया हुआ था। मौत एक भयानक शोर के साथ आई थी और पूरे शहर पर छा गई थी। जगह–जगह टूट हुए घर थे। ईटे–पत्थरों और धूल का ढेर था। चारों तरफ मलबे के पहाड थे और उन पहाडों के नीचे दबे परीवार के सपने थे। उनकी आकाक्षाएं थी, उनकी जीने का सामान था। [11]

शब्दावली

डॉ. मनमोहन अवस्थी के अनुसार–''शब्द निर्माण में जो जितना कुशल है वह उतना ही बडा साहित्यकार है।'' [12]

प्रतिभा कुष्ण बल के अनुसार–''मन की सूक्ष्मातिसूक्ष्म अनुभूतियों तथा जगत के कोमल, मधुर और विराट रौद्र रूप के सजीव चित्रण की सामर्थ्य कवि के शब्द भण्डार की व्यापकता पर ही निर्भर रहती है।'' [13]

हरियश राय जी ने इस प्रकार की शब्दावली का प्रयोग किया है।उनका शब्द भण्डार अंत्यंत व्यापक है।

तत्सम शब्द

अंतिम पडाव कहानी–संग्रह की अनेक कहानियों में तत्सम शब्दावली का प्रयोग किया गया है। तत्सम शब्दों के कुछ उदाहरण इनकी कहानियों से उद्घृत हैं– दिन, स्वागत, ध्यान, आदेश, मूर्ति, सम्मान, बुँदे, अनभिज्ञता, असहमति, इच्छा, विस्तार, विकलांगता हतप्रभ, आशंका, प्रणाम, प्रतिवाद, पारावार, हिंसक, अशिक्षा, विचलित, अतित, सहजता।

तद्भव शब्द

'अंतिम पडाव' की कहानियों में तद्भव शब्दावली को भी प्रचुर मात्रा में देखा जा सकता है। जैसे कि–छॉव, सॉस, पास, सूरज, मुटठी, तेज, कानों, रात, अहै, गुना, बुँदे, चौराहे, पॉचवॉ, हाथों, बूढी।

देशज शब्द

जो शब्द स्थानीय पदार्थ के रूप में अथवा ध्वनि के अनुसार प्रसिद्ध और प्रचलित हो देशज कहलाते हैं। हरियश राय जी को कुछ कहानियों में देशज शब्दावली का प्रयोग मिलता है जैसेः– रजाई, बाल्टी, हुक्का, ठेंगा, राशन–पानी।

विदेशी शब्दावली

किसी भी दूसरी भाषा जैसे अंग्रेजी, फारसी शब्दों का प्रयोग जब हिन्दी भाषा में किया जायेगा तो वे शब्द 'विदेशी' कहलाएंगे।'अंतिम पडाव' की कहानियों में अंग्रेजी, अरबी–फारसी शब्दावली का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है। उदाहरण के लिए– संडे, मैडम, एक्सक्यूज मी, ट्रेफिक, फोन, कम्प्यूटर, स्क्रीन, फीस, प्रिंसिपल, गेट,सुपरवाईजर, पैनल, एस.एम.एस, अलार्म, आफिस, प्लांट, स्कूल, कंपनी, कैमरा, एयरकंडीशनर, एक्सचेंज, मनी, रश, टाईम।

अरबी–फारसी

मुलाकात फुर्सत, उम्र, आखिर, इलाके, नजारा, जेहन, तबीयत, खुद, खत्म, अखबार, दावत, दिक्कत, अंबार, मायूसी, हर्ज, जबान, वफादारी, यकीन, हिफाजत, एहसास, इसारा, काशिश, खुशी, बरकरार, तलाश, पीसने, उमस, नम, शिकार।

वाक्य रचना

भाषा में वाक्यों का व्यवस्थित ढंग से प्रयोग किया जाना बडा महत्व रखता है। वाक्य के दो प्रमुख अंग माने जाते हैः– उद्देश्य और विधये। हरियश जी वाक्य रचना के प्रति बडे सजग दिखाई देते हैं। उनके लघुवाक्य बोधगम्य और सरस होते हैं जैसेः–''समय जो जिगर के टुकडे को भुला देता है।'' [14] ''सब राधे कृष्ण की मूर्ति पर पैसे चढाते हैं।'' [15]

इनके निबन्धों में कहीं–कहीं लम्बे वाक्य भी मिलते हैं। लम्बे वाक्य का उदाहरण देखिएः–

'थोडी देर बाद वे हरिप्रकाश के कंधे का सहारा लेकर उठे और धीरे–धीरे चलने लगे, उन रास्तोंपर जहॉ जॉगिंग किया करते थे, अपने आपको स्वस्थ रखने के लिए, अपने आपको चुस्त बनाए रखने के लिए।' [16]

शैली

शैली शब्द अंग्रेजी के स्टाईल (जलसमद्ध शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। ष्जलसमष शब्द लैटीन भाषा के "जलसमे' से बना है। जिसका अर्थ होता है– 'नोकदार कलम'। शैली का साधारण अर्थ है–ढंग, जैसे खाने–पीने का ढंग, लिखने–बोलने का ढंग आदि। प्रत्येक लेखक की अपनी शैली होती है। किसी विषय को भिन्न–भिन्न व्यक्ति अपनी अभिव्यक्तिकौशल के कारण भिन्न–भिन्न प्रकार से अभिव्यक्ति करते हैं।वही भिन्नता उनकी शैली कहलाती है। हरियशराय जी की कहानियों में शैली वैविध्य मिलता है।

आत्मकथात्मक शैली में लेखक बीती हुई घटनाओं को याद करते हुए चलता है। शैली की इस विशिष्टता के कारण साहित्य में आत्मीयता एवं सार्थकता झलकने लगती है। हरियशजी की कहानियोंमें आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग मिलता है।

यह तब की बात थी जब वे सर्विस में थे। तब सुबह पॉच बजते ही यह बाग उनकी चेतना में छा जाता था सर्दि हो या गर्मी, वे बिना आलस्य बाग के रास्तों पर दौड लगाने के लिए अपने आपको तैयार करते। सफेद टी शर्ट, सफेद पैन्ट और कैनवास के जुते पहनकर वे इस बाग में आते। सुबह की सैर भी होती और बाग का मुआयना भी होता। फिश एक्वेरियम भी देखते। सॉपों की खैर–खबर लेते। बतखों और पक्षियों के खडे होकर उन्हे दाना खिलाते। बंदरों को खौं–खौं करके उन्हे चिढाते, बाग के माली को कुछ जरूरी हिदायतें देते। इत्मीनान से एक पेड के नीचे किसी बेंच पर बैठते और वापस चले जाते कल फिर आने के लिए।'' [17]

एक अन्य उदाहरण देखिएः–'जब वे महकमें के इंचार्ज थे तब कुछ सुगबुगाहट उन्होने भी सुनी थी कि लोग इस जमीन पर बाग नही बनने देना चाहते, पर कोई उनके सामने बोलता नही था। उनके पद और रौब–दाब को देखकर लोग चुप्पी साध लेते थे। उनकी हर बात का समर्थन करते थे। लकिन उनके रिटायर होने के बाद लोग उनके द्वारा बनाए गए बाग का मखौल उडाने लगे थे उनके फैसले को गलत, फालतू और घातक मानने लगे थे और उन पर फब्तियॉ कसने लगे थे तब से बैचेन रहने लगे थे। वे दिनभर भटकने लगे थे। जाने कहॉ–कहॉ शहर की गलियों में। उन्हे ं नींद नही आती थी। उन्हें विश्वास नही होता था कि उनके सामने ही उनका मिशन इस तरह फालतू और निरर्थक हो जाएगा,खासकर तब जब यह काम पूरा हुआ था तो लोगों ने इसकी तारीफ में कसीदे कढे थे। उन्हें बधाईयॉ दी थी। वे बार–बार उस बाग की तरफ आते थे जिसे उन्होनें बनवाया था। अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को बडे गर्वकेसाथ बाग के बारे में बताते।' [18]

शैली

ठइसमें लेखक सीधे–सीधे अपनी बात को न कहकर व्यंग्य का सहारा लेता है। हरियश राय जी ने अपनी कहानियों में कहीं–कहीं व्यग्यात्मक शैलीका प्रयोग किया है। जैसे–'पहला मंडीयों में सफल रखने वासते किसानॉ के पास कोई जगह नहीं है। सरकार ने उनके वास्ते जगह तो बनाई पर उन पर महाजन और दलाल कब्जों कर लियो है। किसान तो अपनो सामान को जानवरों सुॅ बचानों पडे, धूप,ताप और बरसात सूॅ अकसर सामान खराब भी हो जावे.....किसान की मुश्किलॉ अब घणी बढगी..... .....पहलॉ भी महाजनों की मार थी, अब भी है। कर्ज अर किसान तो समझों दो बैलों की जोडी है..... एक दूजों का साथ छोडे तो मानों जिंदगी को हल ही न चलें। किसान पहलॉ भी कर्ज में

डूबा रहता और आज भी गले ताई डूबा रहवै है.....कही कोई बदलाव नही..... चारों कोनों महाजनॉ को बोलबालों है।' [19]
पांच साल पहले आई. आई. टी. से इंजिनियरिंग करने के दौरान ही उसका चयन इस कंपनी में हो गया था। अच्छा– खासा वेतन यह कंपनी उसे दे रही थी फलैट और गाडी भी कंपनी ने ही दी थी पर उसे यह नही पता था कि उसका जीवन इस तरह हो जाएगा।कंपनी इस तरह उसके जीवन पर कब्जा कर लेगी।' [20]
हरिवंश राय जी ने अपनी कहानियों में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है जैसे–'भुज पहुॅचते–पहुॅचते रात हो गई सीधेपहुंचे अपने घर। उनका घर टूट चुका था। घर का सारा सामान मलबें में दबा पडा है। उनकी पत्नी और बच्चों के सिरों पर चोटें आई थी। उनके सिर पर पट्टियां बंधी थी मलबे के पास ही एक कोने में घर के मलबे से निकाला हुआ सामान रखा था मॉ–बाप की ऑखें में वीरानगी थी। सबकों चोटें आई थी। किसी को स्कूल के मास्टर और गॉव के न जाने कितने छोटे–छोटे बच्चे मलबों में दब गए।'' शहर में रह गए थे आधे टूटे मकान। उन मकानों में घर का बिखरा सामान, टूटा टी.वी., टूटा फ्रिज, घर में बिखरें रयोई के बर्तन, दिवारों में दरार, उन दरारों के ऊपर फहरातें कलेंडर, कराहते लाग, दवाईयों का इंतजार करते लोग। उन्होनें देखा, न उनके खाने का ढिकाना था, न पीने का। लोग भूखे–प्यासे थे ओर ठंड में ठिठुर रहे थे। जहॉ तक नजर जाती थी मलबा ही मलबा था' [21]

विवेचनात्मक शैली

हरियश राय जी की कहानियों में विवेचनात्मक शैली भी देखने को मिलती है। जैसेः– ' क्या हमारा जीवन इसी तरह निकल जाएगा? अधूरी नींद और खाली पेट और एक किडनी लिए। खुली हवा में सॉस लिए बिना। क्या हमारी किस्मत में इस कमरें की गर्म हवाऍ लिखी है? क्या मैं इसी तरह रोज साठ मिलोमीटर का सफर तय करके सरदार साहब की तिजोरियॉ भरता रहूॅगा।'' [22]

विचारात्मक शैली

हरियश राय जी ने अपनी कहानियों में विचारात्मक शैली का भी प्रयोग किया गया है–' पर क्या हो सका है आम आदमी का जीवन बेहतर? क्या लम्बी–लम्बी चौडी–चौडी सडके बनाना ही विकास है? आम आदमी का जीवन स्तर कितना उठ सका? उसकी रोज की समस्याऍ कितनी कम हुई या ज्यादा हुई? उसका जीवन कितना खुशहाल हुआ या केवल थोडी– बहुत खुशहाली उस जैसे लोगों तक ही सिमटकर रह गई? पर वह भी खुश कहां है? दिन–रात काम ही काम। आखिर क्या फर्क है उसमे और घर में झाडू–पोंछा का काम करने वाली शॉति बाई में? वह भी अपना घर चलाने के लिए कई घरों में काम करती है। उसकी नौकरी तो छह बजे शुरू हो जाती है और देर रात तक खत्म होती है। क्या फर्क है उसमें और शांति बाई में वह भी दिन–रात खटती है और मैं भी। वह मेरा काम करती है और मैं इन विदशी कंपनियों का। पर जीवन तो किसी तरह खुशहाल नही हुआ न।' [2]
उसने कहीं पढा था कि लगातार रोज पंद्रह घण्टे कम्प्यूटर पर काम करते–करते आज की पीढी–चालीस तक पहुॅचते–पहुॅचते बूढी हो जाएगी। आज किसी को गर्दन की बीमारी हो रही है तो किसी को गंभीर सिरदर्द और काई ऑखों की बिमारी से पीडित है। कहीं वह भी तो इस जंजाल में नही फंस रही है। क्या फायदा इतना काम करने से? क्या फायदा इस प्रकार की नौकरी का? इन कंपनियों का विरोध होना बहुत जरूरी है।' [24]

चित्रात्मक शैली

हरियश राय जी की कहानियों में कहीं–कहीं चित्रात्मक शैली भी दिखलाई देती है। जिससें की वातावरण में सजीवता आ जाती है जैसे– 'उन्होनें बाग के एक–एक पेड पर अपनी नजर दौडाई। पेडों की लडकियॉ काटी जा चुकी थी सारे के सारे पेड ठंठ से लग रहे थे। बाग के बीचों बीच उन्हें कूडे का एक बहुत बउा ढेर नजर आया। उस ढेर को जलाया जा रहा था, जिसका काला–काला धुऑ आकाशकी और जा रहा था वे देख रहे थे कि जो बेंचे उन्होनें शहर के बूढों, युवको, युवतियों बच्चों के बैठने के लिए लगवाई थीं, वे क्षत–विक्षत हो चुकी थी। वह फव्वारा जो रंगीन रोशनियों के साथ पानी की छटाऍ बिखेरता था, ध्वस्त हो चुका था। वह म्यूजिकल सिस्टम, जहॉ से सुबह– शाम संगीत की धारा फूटती थी, तहस–नहस हो चुका था। [26]
पैसंठ साल की उम्र रही होगी उनकी। उम्र के अनंसार बाल कुछ ज्यादा ही झड चुके थे सिर से गंजापन झॉक रहॉ था। छोटा–सा कद था उनका। ऑखों पर मोटाचश्मा था। उस चश्में के पीछे से झॉकती दीन–दूनियॉ को देख चुकी ऑखो थी। हलके पीले रंग का कुर्ता और पायजामा था। पॉव में रबड की च्पलें, हाथ में छडी थी जा सहरे के लिए नही, अब भी अपना रौब गालिब करने के काम आती थी। [26]

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि साहित्य में कथ्य के साथ–साथ शिल्प का भी महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि लेखक अपने भावों और विचारों को शिल्प के माध्यम से ही मूर्त रूप प्रदन करता है। लेखक के मानस पटल पर सामाजिक संदर्भो एवं बदलते परिवेश के संवेगात्मक क्षणों का प्रभाव पडता है। अपने शिल्प के माध्यम से ही साहित्यकार साधारण से साधारण घटना को भी विशिष्ट रूप प्रदान कर देता है। अंत में कह सकते हैं। कि हरियश राय जी की कहानियॉ शिल्प की दृष्टि से सफल है। उन्होनें अपने आप में शिल्प की सभी आवश्यकताओं को पूरा किया है।

संदर्भ

1. शोभा वेरेकर, साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों का शिल्प विकास, पृ. 15.
2. वेणु शाह, फणीश्वर नाथ रेणु का कथा शिल्प, पृ. 20
3. सं. कालिका प्रसाद, वृहद हिन्दी कोष, पृ. 1334
4. लक्ष्मीनारायण लाल, हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास, पृ. 103
5. शोभा वेरेकर, साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों का शिल्प विकास, पृ. 27
6. शोभा वेरेकर, साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों का शिल्प विकास, पृ. 27
7. आचार्य विश्वनाथ, साहित्य दर्पण, पृ.19
8. हरियश राय, अंतिम पडाव, पृ. 37
9. हरियश राय, अंतिम पडाव, पृ. 37
10. हरियश राय, अंतिम पडाव, पृ. 73
11. हरियश राय, अंतिम पडाव, पृ. 88
12. डॉ. मनमोहन अवस्थी, आधुनिक हिन्दी काव्य शिल्प, पृ. 21
13. प्रतिभा कृष्णबल,छायावाद का काव्य शिल्प, पृ 152
14. हरियश राय, अंतिम पडाव, पृ. 82
15. हरियश राय, अंतिम पडाव, पृ. 13
16. हरियश राय, अंतिम पडाव, पृ. 77
17. हरियश राय, अंतिम पडाव, पृ. 77
18. हरियश राय, अंतिम पडाव, पृ. 80
19. हरियश राय, अंतिम पडाव, पृ. 43
20. हरियश राय, अंतिम पडाव, पृ. 53
21. हरियश राय, अंतिम पडाव, पृ 88
22. हरियश राय, अंतिम पडाव, पृ. 34
23. हरियश राय, अंतिम पडाव, पृ. 58
24. हरियश राय, अंतिम पडाव, पृ 62
25. हरियश राय, अंतिम पडाव, पृ. 75
26. हरियश राय, अंतिम पडाव, पृ. 78